International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 242-243

विश्व शान्ति के लिए शिक्षा : एक आधारशीला के रूप में

रवीन्द्र कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, बेनी माधव सिंह महाविद्यालय, राज्य वि0वि0, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानव शान्ति की समस्या सम्भवतः अनादिकाल से चली आ रही एक समस्या है जिसने वर्तमान समय में एक विकराल रूप धारण कर लिया है। भारतीय धर्म ग्रन्थों में सम्पूर्ण विश्व चर व अचर दोनों में शान्ति कायम करने की विपुल चर्चाए मिलती है। जीसस क्राइस्ट, मोहम्मद साहब, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, गुरू नानक, सन्त कबीर, महात्मा गांधी, मदर टरेसा जैसे महापुरूषों ने शान्ति स्थापित करने की दिशा में अथक कार्य किया है। प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में हुए व्यापक नरसंहार व बर्बादी को लोग अभी भी याद करके सीहर जाते हैं। आज वर्ममान समय में विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों में अशान्ति, हिंसा, आतंकवाद, विद्वेश आदि की प्रवृत्तियाँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि विश्व बारूद की ढेर के साथ तृतीय विश्व युद्ध के कगार पर खड़ा है एवं गलत कदम की कोई एक चिंगारी इस बारूद को सुलगा कर मानव जाति को कब नष्ट कर देगी, यह शंका सदैव बनी रहती है।

शान्ति मधुरता और भाईचारे की अवस्था है, जिसमें बैर अनुपस्थिति होता है। इस शब्द का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में युद्ध विराम या संघर्ष में ठहराव के लिए किया जाता है। इस अर्थ में यह शब्द युद्ध का विलोम है। देखा जाय तो शान्ति के अभाव में जीवन का आधार नहीं है, हजारों सालों से भारत विश्व का गुरू और शान्तिदूत रहा था लेकिन मानव की स्वार्थ सिद्धी के कारण भारत में शान्ति का पतन होता आया है। आज आम आदमी के जीवन में भय व्याप्त हो गया है, इसका मूल कारण स्वार्थ, कायरता, अविश्वास और ईश्वर प्रदत प्रेम–भाव का आम जन में समाप्त होना और इन मूल कारणों की समाप्ति शिक्षा से सम्भव है।

आधारभूत अशंका है, लेकिन विडंबना है वह आदिकाल से इसके लिए अशान्ति के आयोजन में लगा रहा है। यही कारण है अशांति कभी धर्म के रथ पर आती है तो कभी राजनीति की सखी बनकर प्रस्तुत होती है। यही कारण है कि विश्व मानवता हिंसा से लहुलुहान हो चुकी है और लगभग 20 हजार छोटे–बड़े युद्धों के बाद भी निःशस्त्रीकरण एक दिवास्वपन हो रहा है। आज विश्व शान्ति के लिए किए जा रहे प्रयास एक आडम्बर प्रतीत होता है, या तो शान्ति का संकल्प एक प्रवचन है या तो मान लिया जाए जैसे बाघ और सिंह के लिए पशु और मनुष्यों का शिकार उसकी प्रकृति का अनिवार्य अंग है उसी प्रकार मनुष्य का स्वभाव निराशावादी भी इसमें भी इसमें कमाल है। डर्विन ने भले ही अस्तित्व के लिए जीवन संघर्ष और उसमें योग्यतम की विजय का सिद्धान्त निरूपित किया है लेकिन फिर मानव जैसा सीमित शरीर बल का प्राणी किस प्रकार प्रभुसत्ता का अधिकारी बन गया। यदि हम मानव की विजय यात्रा में शरीर बल के साथ उसके बुद्धि बल के कारण उसके विजय पताका को मानते हैं तो दूसरा प्रश्न आता है कि मानव समाज में बालक और वृद्ध अशक्त और अक्षम व्यक्ति भी किस प्रकार सुरक्षित और संरक्षित रहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि शरीर बल और बुद्धि के अलावा नीतिबल और सामाजिक मर्यादा भी मानव सभ्यता का आधार है। समाजिक और नैतिक जीवन मानवीय सभ्यता का अभिन्न अंग है जो अनुवांशिकता से कम किन्तु शिक्षा व वातावरण और संस्कार से अधिक पाता है। मानव सभ्यता के उर्द्धचरण के कुँजी भी शिक्षा में ही निहित हैं।

मानव सभ्यता के प्रारम्भ से सामाजिक, सद्भाव और विश्व की शान्ति के लिए महान सन्तों ने अपने उपदेशों व शिक्षा के माध्यम से अनेक प्रयास किए। परन्तु आज तक विश्व शान्ति एक मृगतष्णा से अधिक कुछ नहीं है। निःसन्देह शिक्षा के माध्यम से शान्ति स्थापित करने के लक्ष्य की पूर्ति सरलता से की जा सकती है। विद्यालयों तथा कॉलेजो में विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देने की आवश्यकता है, जिससे उनमें आतंकवाद, हिंसा, विद्वेष जैसे अवांछनीय घटनाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो तथा परस्पर सौहार्द, सह अस्तित्व सहयोग, सहिष्णुता, भाईचारा जैसे सकारात्मक गुण पल्लवित हो सकें। शान्ति के सन्देश को ह्रदयंगम करके राष्ट्र के भावी नागरिक समाज में शान्ति बनाकर शान्तिदूत का कार्य बखूबी कर सकते हैं। आज वर्तमान समय में अनेक संस्थाएं तथा सामाजिक संगठन जहाँ हिंसा, अलगाव, आन्दोलन, युद्ध जैसी समस्याओं के शैक्षिक अध्ययन पर अपने काफी संसाधनों को लगाते हैं वहीं शान्ति शिक्षा या शान्ति के लिए शिक्षा प्रदान करने की दिशा में तनिक भी सक्रिय नहीं है। मेरा मानना है कि समाज तथा विश्व के हालात को बदलने का सबसे कारगर जरिया है शिक्षा। अतः अभिभावकों, अध्यापकों, छात्रों, युवाओं ता देश के भावी नेताओं को शान्ति के मूलभूत सिद्धान्तों की शिक्षा देने के लिए एक सुनियुजित तथा संघृत कार्यान्वयन योजना बनाने व क्रियान्वित करने की सख्त जरूरत है। जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी संघर्ष व हिंसा की जारी प्रवृत्ति की रोकथाम करके मानव समाज को युद्ध, कलह व संघर्षों से बचाया जा सके। शान्ति के लिए शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यमों से नये नागरिकों व नेताओं की प्रत्येक पीढ़ी में हिंसा व युद्ध में परिणित होने वाली कलह की आवृत्ति व मात्रा को कम करने के लिए आवश्यक सोच, समझदारी व कौशल विकसित करना अपेक्षित है।

आज हम अभूतपूर्व हिंसा के दौर में जी रहे हैं। इस दौर में असहिष्णुता, कट्टरवाद, विवाद का समाज में बोलबाला हो गया है जो विकास और कल्याणकारी कार्यों में बाधा उत्पन्न कर रहा है। वैश्विक राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर बढ़ती हुई हिंसा के चलते राष्ट्रीय स्कूली शिक्षा पाठयचर्या के ढाँचे में शान्ति शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिये जाने की आवश्यकता है। शान्ति शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों और दृष्टिकोण के पोषण पर बल देती हैं जो प्रकृति और मानव जगत के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है।

विश्व शान्ति के आवश्यकता को समझते हुए और शान्ति शिक्षा का महत्व बताते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है कि–

''अगर हम विश्व को वास्तविक शान्ति का पाठ पढ़ाना चाहते हैं, तो हमें शुरूआत बच्चों से ही करनी होगी।''

मारिया मान्टेसरी ने कहा है कि–
''समस्त शिक्षा शान्ति के लिए ही है।''

यदि हम आधुनिक युग की भूमिका में ही सोचें तो 20वीं शताब्दी यदि दो विश्व युद्धों की और नरसंहार की शताब्दी रही तो 21वीं शदी आतंकवाद और मानव बम की त्रासदी से कलंकित हो गयी है। विश्व शान्ति के लिए बनायी गयी संस्थाएं मूक और निस्तेज होकर महासंहार की तैयारियाँ और संकीर्ण राष्ट्रवाद और धर्म के नाम पर रक्तरंजित इतिहास को देख रही है। वस्तुतः आधुनिक युग की राजनीति विश्व की अशान्ति के समाधान का उपाय नहीं बल्कि उसका मूल कारण है। विश्व में विषमतामूलक आर्थिक संरचना या शोषण और संग्रह इन सबके मूल में राजनीति का शनिश्चर ही है। यहाँ तक की पर्यावरण के विनाश और वैश्वीकरण के नाम पर छद्म पूँजीवाद और उससे होने वाले नुकसान का संचालन सूत्र भी राजनीति के हाथों में हैं। संक्षेप में सभ्ययता का संकट जैसा कि विश्व के 51 नोबल पुरस्कार विजेताओं ने घोषित किया है कि उसके मूल में मूल्यहीन राजनीति का ही हाथ है इसलिए विश्व की संस्कृति के पुनः रचना के लिए शिक्षा ही आधार और अंतिम आशा है। आज दुर्भाग्य यह है कि देश के सुरक्षा के नाम पर विश्वविद्यालयों में सैनिक शिक्षा के लिए और नौजवानों में अनुशासन लाने के लिए एन0सी0सी0 के प्रशिक्षण को आवश्यक समझा जाता है। लेकिन देश में विभिन्न प्रकार की हिंसा और बढ़ते हुए उग्रवाद के लिए शिक्षा जगत से योगदान लेने की कल्पना भी नहीं आती। शान्ति शिक्षा के अन्तर्गत समस्त मानवता के प्रति अहिंसा, स्नेह, दया, करूणा, विश्वास, सहयोग, आदर, भाईचारा, सहनशीलता तथा तर्कसंगतता का भाव निहित रहता है तथा इसका शिक्षण किया जाता है। क्योंकि यह एक सामाजिक अभ्यास है। इसलिए इसमें समूहों के बीच होने वाली गत्यात्मकता तथा सम्प्रषण प्रौद्योगिकी के मूलभूत तत्वों का अध्ययन करना भी अपरिहार्य होते हैं

अतः देश की शिक्षा व्यवस्था को जीवन अभिमूख एंव शान्ति मूलक बनाना राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए शान्ति और सुव्यवस्था के अभाव में विकास के रथ के पहिए भी अवरूद्ध हो जाएंगे। इसलिए शान्ति व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करने एवं समाज में विद्यमान दूरियों को खत्म करने में शिक्षा के महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा तैयार किए गए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप में स्कूलों में शान्ति शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव है। इसके लिए सभी विषयों में शान्ति शिक्षा पर एक–एक अध्याय जोड़ने का विचार है। इस कवायद का उद्देश्य प्रारम्भ से ही बालक–बालिकाओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करना है कि वे शान्ति सूत्र में पिरकर अशान्ति के कारणों का उन्मूलन कर सके। इस हेतु अध्यापकों को भी विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाएगा।

विश्व स्तर पर यूनेस्को तथा यूनिसेफ जैसी संस्थाएं भी शान्ति शिक्षा की जोरदार ढंग से वकालत कर रही है। सन् 2000 को शान्ति संस्कृति का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष तथा 2001–2010 तक के दशक को शान्ति संस्कृति व विश्व के बच्चों के लिए अहिंसा का अन्तर्राष्ट्रीय दशक मनाया जाना वस्तुतः यूनेस्को के इस विचार का सूचक है।

यूनेस्को के संविधान का प्राक्कथन

''चूँकि युद्ध मानव मस्तिष्क से शुरू होता है तो शान्ति की रक्षा के लिए भी मानव मस्तिष्क को ही सक्रिय होना पड़ेगा।''

मानवता के अस्तित्व को अक्षुण रखने एवं विश्व को युद्धों की विभीषकाओं से बचाने के लिए हम सभी को शान्ति शिक्षा के प्रचार–प्रसार में कठिबद्ध होकर सहयोग करना होगा।

संदर्भ

1. गुप्ता एस0पी0 (डॉ0), गुप्ता अलका (डॉ0) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ। पृ0सं0–574–575
2. m.indiawebdunia.com
3. https://www.pravkta.com
4. www.ncert.nic.in
5. httpsi//hi.m.wikipedia.org